अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार

विकास का मानवीय सन्दर्भ और दीनदयाल उपाध्याय का चिन्तन

स्थान- सभागार

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया (उ०प्र०)

www.jncu.ac.in

संरक्षक

डॉ० योगेन्द्र सिंह

कुलपति

दिनांक- 09-10 दिसम्बर, 2017

अन्तर- अनुशासनात्मक सेमीनार

महोदय/महोदया,

हमें यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि राजनीतिशास्त्र विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन महाविद्यालय, बलिया उ0प्र0 एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार ***''विकास का मानवीय सन्दर्भ और दीनदयाल उपाध्याय का चिन्तन''*** दिनांक-09-10 दिसम्बर, 2017 को आयोजित करने जा रहे हैं। यह आयोजन जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न होगा। हम इस सेमीनार में आपको आमंत्रित करते हैं।

इस सेमीनार के मुख्य विषय से सम्बद्ध निम्नलिखित विचारणीय विषय होंगे-

1- विकास और मानव एकात्मवाद दर्शन
2- देश के घरेलू आन्तरिक स्त्रोत की गतिशीलता
3- बेमेल भारतीय आर्थिक और पश्चिमी आर्थिक मॉडल
4- भारतीय राजनीतिक विचारों में मनुष्य
5- प्राचीन भारतीय विचार दर्शन में निरपेक्ष सत्ता
6- राजनीति में धर्म की सम्प्रभुता
7- विकास और प्राकृतिक स्त्रोत का सदुपयोग
8- विकास और उपभोग का निर्धारण
9- आम आदमी तक विकास की सकारात्मक पहुँच
10- विकास के मानक में भौतिकता और मानव का स्थान
11- विकास और विविधता में एकता
12- विकास की कृत्रिमता
13- शान्ति, सौहार्द, लिंग समानता एवं मानव विकास के लक्ष्य में भारत सरकार की नीतियाँ
14- विकास और मनुष्य का चतुर्दिक विकास
15- भारतीय कृषि और पशुपालन की समस्याएँ और समाधान
16- विकास और अद्वैत वेदान्त
17- भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
18- विकास और विषमता/असमानता
19- विकास और अन्त्योदय
20- विकास में मानव गरिमा और बन्धुता की रक्षा
21- सामाजिक संस्कृति पर आधारित सामाजिक विकास
22- आधुनिक ज्ञान का देशानुकूल उपयोग
23- राजनीतिक विचारों के विकास में धर्म की भूमिका
24- क्वांटम भौतिकी के परिप्रेक्ष्य में मानव एकात्म
25- वनस्पति जगत में विविधता में एकता
26- सैनिक समार्थ्य में आत्मनिर्भरता
27- राज्य पोषित आतंकवाद
28- विकास और जीवन के मानदण्ड
29- विकास और विकेन्द्रीकरण
30- जनसंख्या वृद्धि विकास में सहायक अथवा बाधा
31- विकास में मानव स्त्रोत की भूमिका
32- रोजगार का मौलिक अधिकार
33- विकास और आर्थिक गणतन्त्र
34- कृषि और पर्यावरण स्वास्थ्य : भारतीय समाज का आधार
35- विकास और उपभोग की न्यूनतम मर्यादा
36- राज्य सम्प्रभुता : एकांगी अथवा बहुलवादी
37- राज्य की भूमिका : सीमित अथवा असीमित
38- साहित्य में दलित, आदिवासी और वंचित वर्ग के प्रति संवेदनशीलता
39- साहित्य में मानव विकास की चिन्ता

नोट- मुख्य विषय से सम्बन्धित अन्य विषय भी हो सकते हैं।

शोधपत्र-

पूर्ण शोध पत्र अथवा सारांशिका (300 शब्द) rajeev.csss@gmail.com पर दिनांक 07 दिसम्बर, 2017 तक आमन्त्रित किये जाते हैं। अंग्रेजी में (MS Word, New Times Roman, Font size-12) अथवा हिन्दी में (Kurti Dev 10, Font size-14) शोध पत्र अथवा सारांशिका में शीर्षक/विषय, लेखक का नाम, सम्बद्धता, ई-मेल, फोन नं0 आदि अंकित होना चाहिए।

रजिस्ट्रेशनः-

सेमीनार में प्रस्तुत शोधपत्र विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्य जर्नल में प्रकाशित होंगे तथा शेष शोध पत्र सम्पादकीय पुस्तक के रुप में ISBN के साथ प्रकाशित होंगे। **वी0एल0 मीडिया सोल्यूशन्स, नई दिल्ली, सेमीनार के प्रकाशन सहयोगी है।** सेमीनार में अनके पुस्तक प्रकाशकों के स्टाल भी रहेंगे।

रजिस्ट्रेशनः शोध पत्र व प्रकाशन के साथ 2000/-
बिना प्रकाशन के साथ 1000/-

आवासीय सहयोग, सूचना तथा रजिस्ट्रेशन के लिए आप से भी सम्पर्क कर सकते हैं-

(1) **डॉ० अभय नारायण राय**
राजनीतिशास्त्र विभाग
श्री मु0म0टा0 महाविद्यालय, बलिया
9838737376

(2) **श्री रमेश कुमार राय**
राजनीतिशास्त्र विभाग
श्री मु0म0टा0 महाविद्यालय, बलिया
7524829111

सेमीनार संयोजक
डॉ० राजीव कुमार
अध्यक्ष- राजनीतिशास्त्र विभाग
डीनः विधि संकाय
जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय
बलिया-277001 (उ0प्र0)
9415248731, rajeev.csss@gmail.com

दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन पर आधारित सेमीनार के मुख्य विषय का सार-

आज के समाज में बहुसंख्यक समाज नून, तेल, लकड़ी की चिन्ता में ही सुबह से शाम, दिन, महीने, और वर्ष बिताता हुआ अपने जीवन की घड़ियाँ काट जाता है। देश, धर्म, साहित्य आदि शेष प्रश्न उसके सामने प्रमुख रूप से आते ही नहीं।

मानव जीवन की वास्तविकता, उसके उद्देश्य और हेतु एवं उच्चतम् विकास की सीमाएँ आदि के सम्बन्ध में एक एकांगी तथा विकृत दृष्टिकोण का प्रसार बड़ी तेजी के साथ होता रहा है। साध्य और साधन का विवेक समाप्त हो रहा है। अर्थोत्पादन जीवन का आवश्यक आधार ही नहीं, सम्पूर्ण जीवन बन गया है। यही कारण है कि भौतिक प्रगति करते हुए भी हमारे अन्त:करण को सन्तुष्टि एवं शान्ति प्राप्त नहीं हो रही। श्री और समृद्धि का उपभोग कर सकें ऐसे मार्ग के निर्धारण पर विचार की आवश्यकता है।

मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं और इच्छाओं का पिण्ड नहीं अपितु वह आध्यात्मिक तत्व भी है। देश काल व्यवस्था के अनुरूप अर्थ, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना के साथ-साथ जीवन के इस सर्व संग्राही भाव को भी स्थान देना होगा।

इसीलिए भारतीय साहित्य आचरणात्मक एवं आदर्शपूर्ण मानव मूल्यों के लिए एक अनुपम धरोहर है। वेदों में मानव जन्म को उत्कृष्ट सिद्ध किया गया है। वर्तमान संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य में दलित, आदिवासी और समाज में विकास की दौड़ में पीछे रहने वाले लोगों के प्रति संवेदनशीलता प्रकट हो रही है।

अंग्रेजों की विरासत में हमने प्रगति के पश्चिमी मानदण्डों को ही उत्तरोत्तर स्वीकार कर लिया जबकि अपने जीवनदर्शन का विचार कर भारतीय अर्थव्यवस्था का मौलिक निरूपण करने की आवश्यकता थी। भारत के स्व का साक्षात्कार किए बिना हम भारत की समस्याओं को सुलझा नहीं पायेंगे। अपने तत्व और सामर्थ्य के विकास के स्थान पर परावलम्बन एवं आत्महीनता का भाव त्यागकर ऐसी योजनायें बनानी होंगी जिससे जनसाधारण के जीवन में सुख और समाधान की सृष्टि हो सके। यही राज्य का लक्ष्य भी है। राष्ट्रीय सुरक्षा, पूर्ण रोजगार तथा विकेन्द्रीकरण हमारे आर्थिक कार्यक्रमों का आधारभूत लक्ष्य होना चाहिए।

भारत ने भौतिक जगत का ही नहीं अर्थ का भी विचार किया है। महर्षि चाणक्य ने कहा कि सुख धर्ममूलक है और धर्म अर्थ मूलक। अर्थ के बिना धर्म नहीं टिकता। धर्म का अर्थ एक विशेष आचार संहिता से है। मानव की क्रियायें और चेष्टाओं का इस प्रकार नियमन होना चाहिए जिससे उसका निरन्तर विकास हो और वह मानवीय सत्ता के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने के योग्य बन सके। भारतीय दर्शन में नैतिकता और दर्शन दोनों का समन्वय है। इस बात पर बल दिया गया है कि व्यक्तियों को ऐसा आचरण करना चाहिए जो उसके अन्तश्चेतना के प्रतिकूल न हो। जिसके द्वारा प्रणियों का अधिकतम् कल्याण हो वही सत्य (कर्म) है। मानव-जीवन की सत्ता के प्रयोजन एवं उनके साधन नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अनुशीलन करते हैं। सम्पूर्ण दर्शन का केन्द्र बिन्दु मानव जीवन है। मानव और मानवता की रक्षा के बिना और सब व्यर्थ है। यदि धर्म अर्थ और काम इन तीनों के क्षेत्रों में, समाज में अव्यवस्था और अनैतिकता बनी रहे तो राज्य का उद्देश्य ही नष्ट हो जाता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया' का सिद्धान्त ही सर्व-हित-राज्य का आधार बनना चाहिए। वर्तमान में मानव के बीच आत्मीयता के स्थान पर कृत्रिमता पनप रही है। व्यवस्था में मानव को मानव न मानकर मशीन का ऊर्जा मात्र बनाकर उसके व्यक्तित्व को समाप्त कर रही है।

हम ड्राइवर रहित गाड़ियाँ और मैट्रो के दौर में आ चुके हैं। ड्रोन घर-घर पीजा पहुँचाने और कोरियर का काम कर रहे हैं। रोबोटिक आपरेशन का दौर है। डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी से घर बैठे ही अनेक कार्य संपादित हो जाते हैं। वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर तकनीकी वरिष्ठता की दौड़ में प्रमुख देशों ने घातक हथियारों से विश्व को पाट दिया है। भविष्य में रोबोट युद्ध की तैयारी है। पश्चिम एशिया के देशों में हो रहे गृहयुद्ध में रसायनिक हथियारों का प्रयोग हुआ है। राष्ट्र हित के नाम पर दुनिया बुरे व अच्छे आतंकवाद में बँटी है। मजहब का नाम लेकर आतंवादी क्रियाकलापों के पीछे स्मगलिंग

और विशाल कालेधन का प्रयोग हो रहा है और आम निरीह लोगों की निर्मम हत्यायें हो रही हैं। समाज सेवी संगठनों, संयुक्त राष्ट्र संगठन के आनुषंगिक संगठनों का प्रयोग कूटनीति के रूप में किया जा रहा है।

भारत को अपनी प्राथमिकता निश्चित करनी होंगी। भारत में निर्धनता व्यापक पैमाने पर है। दूसरे प्रमुख देशों की प्रति व्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय से तुलना करने पर भारी अन्तर मिलता है। यद्यपि राष्ट्रीय आय जिन सिद्धान्तों पर की जाती है वह भारत में पूरी तरह से लागू नहीं होते। भारत में ऐसा बहुत सा उत्पादन है जो मुद्राक्षेत्र के अन्तर्गत नहीं आता। फिर भी, हमें जनसंख्या वृद्धि, उपभोग वस्तुओं की अधिकता, उत्पादन की सीमा, उपभोग की न्यूनतम मर्यादा, कृषि पर भार, औद्योगीकरण एवं कृषि, कृषि की आय वृद्धि की आवश्यकता, कृषि उत्पादन में वृद्धि, खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता आदि विषयों पर विचार करते हुए भारत को अपने विशाल बाजार का विकास करना चाहिए और यह कृषि की उपज बढ़ाने से ही सम्भव हो सकेगा। इसके लिए हमें कृषि की आज की स्थिति एवं उसकी समस्याओं की ओर ध्यान देना होगा। खेती की पद्धति में सुधार जिससे भूमि की उर्वरता बनी रहे, बड़ी योजनाओं के स्थान पर छोटी उपयोगी योजनाओं जैसे छोटी-छोटी नहरों, नालों, तालाब, कुओं का निर्माण व मरम्मत, पशुधन को उत्पादक बनाना, रसायनिक उर्वरकों का कम तथा गोबर आदि खाद के समग्र साधनों का विकास, कृषि के अन्तर्विभाजन एवं अपखण्डन की समस्या का समाधान, भूरक्षण, विपणन, फसल का मूल्य निर्धारण आदि के परिप्रेक्ष्य में कृषि प्रधान भारत देश में कृषि के विकास की आवश्यकता है।

खेती ओर पशुपालन भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। यह हमारी संस्कृति, सभ्यता और जीवन शैली का दर्पण भी है। देश की खाद्य, पोषण और आजीविका सुरक्षा के लिए कृषि और पशुपालन का महत्वपूर्ण स्थान है। व्यवसायिक एवं आर्थिक प्रवृत्ति के कारण उपज में ठहराव, मृदा स्वास्थ्य एवं उर्वरता में गिरावट, खेती में बढ़ती लागत, श्रम का बदलता स्वरूप, घटती जोत आदि समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। विकसित तकनीकी ज्ञान का लाभ दूरस्थ किसानों को अनुपलब्ध है। तकनीकी भ्रम की स्थिति भी है। इसके कारण कृषि कम लाभ वाला उपक्रम क्षेत्र हो गया है। इसके अतिरिक्त, बिचौलियों की सक्रियता, समर्थन मूल्य का अभाव, उचित भण्डारण व्यवस्था की कमी, उन्नत मशीनों का अभाव, कृषि तकनीकी सूचना का अभाव आदि कारणों से कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। यद्यपि, दूध, दुग्ध पदार्थ, केला, गन्ना, आम, सब्जियाँ, फल, जूट, चाय, काफी, नारियल, आदि के उत्पादन में भारत का सर्वोच्च स्थान है।

कृषि के साथ-साथ उद्योग वाणिज्य भी परस्पर सम्बद्ध हैं। भारत का औद्योगीकरण भी आवश्यक है। भारत का औद्योगीकरण इस प्रकार हो जिससे किसी आवश्यक वस्तुओं के लिए उसे दूसरे देशों पर निर्भर न रहना पड़े। मनुष्य, माल, मुद्रा, मशीन, प्रबन्ध, शक्ति और माँग इन सात पक्ष में सन्तुलन बना कर ही औद्योगीकरण होना चाहिए। समाज को अपनी उपयोगी नीति या निर्धारण व्यापक सामाजिक उद्देश्यों व लक्ष्यों के हित में करना होगा। हमारे सामाजिक लक्ष्य, राष्ट्र की सुरक्षा सामर्थ्य को बढाना, उपभोग एवं उत्पादक वस्तुओं में वृद्धि, प्रत्येक को काम, न्यूनतम जीवन स्तर की प्राप्ति, विषमताओं में कमी तथा विकेंद्रीकरण हैं।

प्रोद्योगिकी का सम्बन्ध मशीन से है, हमें उसका चुनाव विचारपूर्वक करना पड़ेगा। हम मशीन को ध्रुव मानकर उसके अनुसार शेष सबको बदलने का विचार करते हैं। मशीन के लिए मनुष्य को बदलने पर विवश कर रहे हैं। सम्पूर्ण उत्पादन प्रणाली मशीन केन्द्रित हो गयी है। कहा जाता था आवश्यकता आविष्कार की जननी है जबकि वर्तमान में आविष्कार आवश्यकताओं का निर्माण कर रहे हैं। हम कुटुम्ब के आधार पर काम को जीवन का अंग बनाकर चल सकते थे जिसमें मालिक, मजदूर, उत्पादक-उपभोक्ता आदि के सम्बन्धों का ठीक-ठीक निर्धारण हो सके। हमें इन सम्बन्धों का निगमन पश्चिम के मूल्य से नहीं करना चाहिए जिन्होंने कटुता निर्माण की। फैक्टरी एक्ट, वेजेज एक्ट आदि कानून पश्चिम की नकल करके बने इसलिए कार्ल मार्क्स ने भी उद्योगपतियों को उसी रूप में चित्रित किया जो 18वीं और 19वीं सदी में ब्रिटेन व यूरोप के अन्य देशों में प्रकट हुआ। भारत के व्यापक औद्योगीकरण में मानव सम्बन्धों का निर्माण हमें अपने मूल्यों पर ही करना होगा।

भारत में समाज का एक ही स्वरूप अर्थात राज्य नहीं माना गया है। व्यक्ति, कुटुम्ब, कुल, जाति, राज्य आदि अनेक रूपों में समाज अपने आपको अभिव्यक्त एवं उनके माध्यम से अपना मनोरथ सिद्ध करता है। व्यक्ति में समाज हित की भावना बनी रहे इसलिए भारत में सम्मिलित कुटुम्ब की एक व्यवहारिक इकाई रखी गयी जिसे प्रत्येक व्यक्ति कमाने का अधिकारी है तथा सम्पत्ति का स्वामी कुटुम्ब रहता है। ट्रस्टीशिप का यही भारतीय सिद्धान्त गांधी जी आदि विचारकों ने समाज के सम्मुख रखा।

पृथ्वी मेरी माँ है और मैं इसका पुत्र हूँ यह विचार भारतीय दर्शन का मूल है। दीनदयाल जी का एकात्म मानववाद दर्शन इसी को केन्द्र में रखकर मानव की मूलभूत एकता में विश्वास करता हैं। इसीलिए संगम संस्कृति ने ही भारत को स्वरूप प्रदान किया है जिसमें स्वीकार्यता, न्यायसंगति, उत्सव, स्त्री-पुरूष समानता और सतत् विकास समाहित है।

जीवन में अनेकता अथवा विविधता है किन्तू उसके मूल में निहित एकता को खोलने का मनुष्य से सदैव प्रयत्न किया है। रसायन शास्त्री भौतिक वैज्ञानिक, भूगर्भशास्त्री आदि भौतिक जगत में कुछ आधारभूत तत्व खोजने में लगे हैं। हीगल ने भी 'थीसिस, ए0टी0 थीसिस तथा सिन्थेसिस' का सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसके आधार पर मार्क्स ने इतिहास एवं अर्थशास्त्र की व्याख्या की। डार्विन ने मात्स्य न्याय को जीवन का आधार माना। सृष्टि में जैसे संघर्ष दिखता है वैसे ही सहयोग भी नजर आता है। संसार की एकता का दर्शन कर, उसके विविध रूपों के बीच परस्पर पूरकता को पहचानकर उनमें परम्परानुकूलता का विकास करना तथा उसका संस्कार करना ही संस्कृति है।

इस प्रकार, भारतीय विचार एवं दर्शन मानव प्रवृत्ति सम्बन्धी दृष्टियों पर आधारित है। सुकरात भी मानता है कि पूर्ण, स्थायी, अपरिवर्तनशील, स्वयंभू सत्ताओं जो वस्तुओं के विचारो में निहित हैं वही इन्द्रियों से प्रतीत होने वाले परिवर्तनशील अपूर्व पद्धार्थों के मूल में रहती हैं। अरस्तू ने भी राज्य के शासन अथवा संविधान की व्याख्या देते हुए मानव को एक समष्टि मानकर उसके कार्यों को समझने के लिए उसके विचारों और स्वभाव को जानना आवश्यक बतलाया है। मैकियावेली, हाब्स आदि विचारक भी मानव को सम्मुख रखकर ही विचार करते हैं। मैकियावेली कहता है कि मनुष्य में असीम और अनन्त इच्छायें हैं। इनकी पूर्ती के लिए ही वह सब कार्य करता है। लेकिन भारत में शासक व शासित दोनों पर धर्म की संम्प्रभुता का दिव्य नियंत्रण माना गया है। यद्यपि वर्तमान में माना जाता है कि समाज के सर्वोपरि हित की साधक संस्था राज्य ही है लेकिन विकास का मानक मनुष्य ही रहना चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने समाज के समाजवादी पद्धति के आधार पर निर्माण करने का प्रयास किया। पश्चिमी विचार मनुष्य को आर्थिक पशु मानते हैं। फ्रायड का मानना है कि मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति है। दीन दयाल जी ने ऐसे समाज के स्वरूप को देखा जिसमें शोषण, भेदभाव, बीमारी तथा अन्धी आकांक्षायें नहीं हो।

मानव ने ज्ञान से जो कुछ कमाया है उससे हम आँख बन्द करके नहीं चल सकते। हम सम्पूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें तथा उसे जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकुल ढाल कर हम प्रगति के मार्ग पर चलें।

1. **डॉ० अभय नारायण राय**
राजनीतिशास्त्र विभाग
श्री मु0म0टा0 महाविद्यालय, बलिया
9838737376

2. **श्री रमेश कुमार राय**
राजनीतिशास्त्र विभाग
श्री मु0म0टा0 महाविद्यालय, बलिया
7524829111

सेमीनार संयोजक
डॉ० राजीव कुमार
अध्यक्ष : राजनीतिशास्त्र विभाग
डीन : विधि संकाय
जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय
बलिया-277001 (उ0प्र0)
9415248731, **rajeev.csss@gmail.com**